ज्ञान तत्व 185,

(क) सेवाग्राम बैठक में लोकस्वाराज्य पर विस्तृत चर्चा ।

(ख) रामतिर्थ अग्रवाल द्वारा रामानुजगंज ब्लाक के प्रयोग का समर्थन ।

(ग) रमण सिंह जी द्वारा सुराज्य की वकालत और मेरा उत्तर ।

(घ) राजीव भगवन जी द्वारा मुझे समीति में शामिल करने के विषय में स्पष्टिकरण ।

(च) अपनों से अपनी बात में लोकस्वराज्य के साथ आर्थिक मुद्दे जोड़ने में सतर्कत्ता ।

(क) सेवाग्राम बैठक

दिनाँक उन्नीस,बीस, इक्कीस सितम्बर को सेवाग्राम आश्रम में बंग जी के आमंत्रण पर लोक स्वराज्य संगोष्ठी सम्पन हुई जिसमें उन्नीस और बीस तारीख को लोक स्वराज्य पर खुली स्वतंत्र चर्चा हुई तथा इक्कीस तारीख को मैंने अभियान से जुड़े विचार रखे।

दो दिनों में इस मुद्दे पर गंभीर चर्चा हुई कि वर्तमान समय में आर्थिक समानता को अधिक प्राथमिकता दी जाय या राजनैतिक स्वतंत्रता को पहली प्राथमिकता प्राथमिकता माना जाय। दोनों ही प्रश्नों के गंभीर विद्वानों ने अपने–अपने तर्क प्रस्तुत किये। अन्त में निष्कर्ष निकला कि दोनों ही प्राथमिकताओं का महत्व होते हुए भी लोक स्वराज्य अभियान राजनैतिक स्वतंत्रता को महत्व देकर उस दिशा में संघर्ष करता रहेगा। आर्थिक मुद्दों पर संघर्ष के लिये किसी अन्य बैनर का उपयोग किया जा सकता है, किन्तु किसी भी स्थिति में लोक स्वराज्य का लक्ष्य राजनैतिक सत्ता का अकेन्द्रीकरण ही होगा और वह अकेला ही रहेगा। उसमें कोई और मुद्दे लक्ष्य के रूप में शामिल नहीं हो सकते। लक्ष्य प्राप्ति को सशक्त करने के लिये कुछ सहायक मांगे शामिल की जा सकती है। जिस तरह वर्तमान में प्रतिनिधि वापसी या राष्ट्रपति के वेतन आदि को जोड़ा गया है। उसका अर्थ हुआ कि यदि प्रशासन से कोई निर्णायक बात होगी तो उसका आधार एकमात्र राजनैतिक सत्ता अकेन्द्रीयकरण ही है। अन्य मुद्दों पर तात्कालिक या सहायक चर्चा तो संभव है किन्तु निर्णायक समझौता संभव नहीं।

इस चर्चा में रहस्य खुला कि विनोवा जी भी स्वतंत्रता के पूर्व पूरी तरह स्वराज्य को ही प्राथमिकता दिया करते थे। उन्होंने सन 1942 में इस संबंध में एक पुस्तक भी लिखी। पुस्तक के अंश भी पढ़कर सुनाये गये। प्रश्न उठा कि गाँधी जी के मरने के बाद स्वराज्य की अवधारणा को पीछे करके आर्थिक मुद्दों को आगे लाने का काम किसने किया? स्वतंत्रता के बाद भी लोहिया और जे0पी0 तो चौखंभा राज्य, सप्त क्रान्ति या सम्पूर्ण क्रान्ति के नाम से स्वराज्य की आवाज उठाते रहे किन्तु गाँधी के अन्य मानने वालों मे इस आवाज को दबाया क्यों? यह बात तो स्पष्ट हुई कि स्वराज्य की दिशा को अन्य दिशाओं में मोड़ा गया। यहाँ तक कि विनोबा जी की लिखी हुई गीता प्रवचन पुस्तक को भी खूब बढ़ाया गया। किन्तु उन्ही की लिखी दूसरी पुस्तक ''स्वराज्य शास्त्र'' अनेक आल्मारियों में उसी तरह धूल चाटती रही जिस तरह जे0पी0 की सन पंचचन की लिखी पुस्तक लोक स्वराज्य लोहिया तो अछूत माने ही जा चुके थे। आज भी जब लोक स्वराज्य की बात उठती है तो कुछ अन्य मुद्दों को अधिक महत्वपूर्ण बताकर लोक स्वराज्य की भूख को भ्रमित करने का प्रयत्न देखा ही जा रहा है। इस मुद्दे पर इस बैठक में विस्तार से चर्चा नहीं हो सकी, क्योंकि समय का अभाव था। अन्त में तय हुआ कि सात लोग बैठकर गाँधी जी की पुस्तक ''हिन्द स्वराज्य'', विनोवा जी की ''स्वराज्य शास्त्र'', जयप्रकाश जी की ''लोक स्वराज्य'' तथा लोहिया जी की ''सप्त क्रांति'' अवधारणा को

मिलाकर विचार मंथन करे तथा मार्ग दर्शन दें। यह कार्य अविनाश भाई काकड़े सेवाग्राम को सौपा गया। यह भी तय हुआ कि दो–तीन माह में एक शिविर सेवाग्राम में रखा जावे, जिसमें अपने कार्यकत्ताओं को लोक स्वराज्य संबंधी प्रशिक्षण तीन दिन का रखा जावे। स्थान सेवाग्राम हो सकता है। दायित्व अभिषेक अज्ञानी जी भोपाल को दिया गया। वर्तमान में जो जनप्रतिनिधि से प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम चल रहा है वह दिल्ली कार्यालय के संचालन में यथावत तथा तीव्र गति से चलता रहे। मार्च में दिल्ली में एक बड़ा कार्यक्रम रखा जावे, जिसकी व्यवस्था और संचालन ओम प्रकाश जी दुबे करें। एक कार्यक्रम धनवाद के लिये जय किशन जी ने प्रस्तावित किया जिसमें सांसद निधि का विरोध करने की बात तय की गई। इसकी व्यवस्था जय किशन जी करेगे ही। इस तरह योजना पर सहमति बनी। यह भी तय हुआ कि एक प्रतिनिधि मंडल सोभनाथ जी चटर्जी से जाकर प्रतिनिधि वापसी संबंधी मुद्दे को आगे लाने हेतु चर्चा करें। इसकी योजना जनार्दन भाई जलगांव ने स्वीकार की।

तीसरे दिन मैने बजरंग मुनि ने समापन भाषण मे स्पष्ट किया कि लक्ष्य और मार्ग की धालमेल नही करनी हैं। स्वतंत्रता गॉधी जी का लक्ष्य था और नमक सत्याग्रह सहायक ! हमारा लक्ष्य सता के अधिकारो का अकेन्द्रीकरण हैं। अन्य मुद्वो को प्राथमिक समझने वाले अन्य मंचो का उपयोग करे ! हमारे लोग भी उसका साथ दे सकते है किन्तु लोक स्चराज्य अभियान की मुख्य धार को भ्रमित करना ठीक नही ! इसी तरह यह भी बताया गया कि आर्थिक असमानता की अपेक्षा राजनैतिक गुलामी अधिक घातक है इस निष्कर्ष से जो लोग विरूद्व है वे लोग कोई अन्य मंच क्यों नही खोज लेते ? मैनें दो टूक कहा कि राजनैतिक स्वतंत्रता के सहायक के रूप में आर्थिक असमानता विरोध की चर्चा संभव है किंतु स्वतंत्र विरोध संभव नहीं। इसलिये न तो हमारे साथी इस संबंध में भ्रम मे रहे आौर ना भ्रम मे डालें। मेरे इस कथन के बाद यह बात स्पष्ट हो चुकी थीं। इसके बाद बंग जी ने भी अपने समापन भाषण में इच्छा प्रकट की कि अब मुद्वोपर चर्चा बंद करके सिर्फ किया पर चर्चा होनी चाहिय और ये चर्चा को कार्य रूप मे डाला जाना चाहिये!

मैने समापन के बाद सोचना शुरू किया कि गॉधी विनोबा जी की स्वराज्य की अवधरणा धूमिल क्यों आौर कैसे हुई? गॉधी विनोबा जयप्रकाश लोहिया आदि सब के सब तो स्वराज्य की अवधारणा के पक्षधर थे! फिर गॉधी के जाते ही क्या और कैसे उलट गया? स्पष्ट है कि उस समय कम्युनिष्ट भी केन्द्रित सता के पक्षधर थे और संघ भीं। नेहरू जी पटेल जी अंबेडकर जी प्रत्यक्ष रूप से केन्द्रियकरण के समर्थक नही थे किंतु अंदर अंदर तो केन्द्रियकरण चाहते ही थे गॉधी हत्या में संघ बदनाम होने के बाद कुछ साम्यवादियो ने लुक छिपकर सत्ता में प्रवेश किया तो कुछ ने सर्वोदय में! नेहरू जी ने धीरे धीरे विनोबा जी को कमजोर किया और वामपंथी नेहरूवादी केन्द्रियकरण की नीति मजबुत होती रही और विनोबा जी चुप रहें। लोहिया जी चिल्लाते रहे और जयप्रकाश जी हाथ मलते रहे किंतु कोई कुछ नही कर सका !पूरी ताकत से लोक स्वराज्य की अवधारणा को या तो दबाया गया या कुचला गया जिससे वह कभी सत्ता के लिये चुनौती न बन सकें। यह नेहरू सोच आज भी जारी हैं। यदि जारी न होती तो आज का सर्वोदय इस तरह सेवाग्रम में बैठकर लोकस्वराज की चर्चा के ही विरूद्व निर्णय नही करता जैसा उसने पिछले दिनो कियां। लगता है कि आज भी सर्वोदय का एक छोटा वर्ग इतना शक्तिशाली है कि वह वामपंथियो के प्रभाव में आकर या सत्ता की दलाली में इतना भी नीचे उतर सकता है!

सेवाग्राम में सम्पन्न चर्चा ने स्पष्ट किया कि धीरे धीरे अनेक सर्वोदय कार्यकर्ता खुलकर सामने आते जा रहे हैं आशा की जानी चाहिये कि जल्द ही सर्वोदय एक जूट होकर गॉधी विनोबा जयप्रकाश की स्वराज्य की इच्छा में लगेगा और शीघ्र ही परिणाम दिखने शुरू हो जायेगें!

(ख) प्रश्नः श्री रामतीर्थ अग्रवाल मनोरोग विज्ञानी हरिनगर दिल्ली

समीक्षाः आपने सरगुजा जिले के रामानुजगंज ब्लाक के सौ गॉवों में जिस लोक ग्रम सभा का चित्र खीचकर सम्मेलन में बताया वह सिर्फ हवाई बातें न होकर एक धरातल का यथार्थ हैं। ऐसी ग्राम सभाएॅ सिर्फ वर्तमान ट्रेडीशनल ग्राम सभाओ को ललकार ही नही रही बल्कि वास्तविक समाधान भी प्रस्तुत कर रही हैं।

वर्तमान में ग्राम सभाओ का जो स्वरूप हैं वह तो संघर्ष का अखाडा मात्र हैं। पंच सरपंच और अधिकारियों के बीच अधिकारो का संघर्ष चलता ही रहता हैं। दूसरी ओर आदिवासी हरिजन सवर्ण स्त्री पुरूष आदि के बीच भी खीचतान चलती ही रहती हैं। आपने जो चित्र रखा उसमें ऐसे सभी विवादो से मुक्ति मिलेगी। ये सभाएॅ टकराव पैदा न करके दूर करने का आधार बनेगीं।
प्रकाशवीर जी शास्त्री हमेशा कहा करते थे कि व्यक्ति कभी अकेला नही होतां। यदि उसका चिन्तन तथा उसकी सकियता ठीक दिशा में हो तो वह अकेला व्यक्ति भी हजारो को राह दिखा सकता हैं। आपका यह प्रयास सिर्फ अकेले का प्रयास न होकर हम सबका प्रयास हैं। आप लोक ग्राम सभा के प्रयत्नो को मजबूती से बढाइये हम सब आपके साथ है ।

उत्तरः पचपन वर्षो की निरंतर खोज के अनुभव के आधार पर निकले निष्कर्षो के मूर्त रूप देने का समय आ गयां। एक ओर तो हम समाज सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत ज्ञानतत्व विस्तार कार्यक्रम शुरू कर ही चुके है दूसरी ओर राज्य कमजोरी करण अभियान को भी दो भागो में किया जा रहा हैं 1 सविधान में परिवार गॉव जिले के अधिकारो की सूची शामिल कराने के लिये राष्ट व्यापी जनमत जागरण 2 धर्म जाति क्षेत्र लिंग उम्र के भेदभाव मुक्त ग्राम पंचायतो का एक ब्लाक में गठन । यह गठन जल्दी ही शुरू हो रहा है। मैने दिल्ली में इस संबंध में बताया भी थां। जब तक हम बिल्कुल गॉव स्तर से जाति, धर्म, क्षेत्र, लिंग, उम्र, गरीब अमीर के भेदभाव मूलक सरकारी कानूनो से मुक्त व्यवस्था तैयार नही करते तब तक समाज टूटता ही रहेगां।

आज ही हमारे एक साथी ने हिन्दी के साथ हो रहे भेदभाव के प्रति कुछ करने की बात कही हैं। कई साथी महिलाओ के साथ हो रहे भेदभाव की बात करते है तो कई हिन्दुओ के साथ या आदिवासी हरिजनो के साथ । यदि अपने साथियो के उक्त विचारो पर हम विचार करें तो इन भेदभाव में सच्चाई भी दिखती हैं। मै ऐसे भेदभाव मूलक व्यवहारो से इन्कार नही

करता किंतु मै समझता हुॅ कि इन सब प्रकार के भेदभाव से भी अधिक घातक भेदभाव है शराफत के विरूद्व धुर्त अपराधी तत्वो का सशक्तिकरण।

मेरे विचार में पहले शराफत की सुरक्षा की सकियता आवश्यक हैं। उसके बाद हम अन्य सकियताओ पर बढ सकते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि अन्य सभी भेदभाव दुर करने के प्रयत्न इस शराफत सशक्तिकरण अभियान में बाधक है, साधक नही । फिर भी यदि कोई साथी वह काम कर रहे है तो मै उनका विरोध नही कर रहा। मै तो सिर्फ इतना निवेदन कर रहा हुॅ कि आप मुझे इस राह चलने मत भटकाइये। अभी उन्नीस बीस सितंम्बर को सेवाग्रम में अर्थिक असमानता को गुलामी तथा अपराधीकरण से भी अधिक खतरनाक बताने वाले साथियो से दो टुक शब्दो मे कहा गया कि आप अपनी राह चलने को स्वतंत्र हैं किंतु आप भविष्य में लोकस्वराज्य की बैठको में आवें तो लोक स्वराज के अतिरिक्त के अपने ऐजेन्डे को बाहर रख कर आइये अन्यथा मत आइयें। हमें आपकी सर्वोतम सलाह नही चाहिये । हमें चाहिये आप से लोकस्वराज पर सलाह । हमें आाप से चाहिये भेदभाव मुक्त ग्रम सभा के गठन की योजना । आप सलाह दे रहे है भेदभाव मूलक आर्थिक विषमता दुर करने की योजना जो मुझे जरूरत नही। मैने बिल्कुल साफ शब्दो में कहा है कि हम वर्ग संघर्ष की जगह गॉवो में वर्ग समन्वय की योजना पर काम करने जा रहे हैं। आपका वर्ग संघर्ष चाहे कितना भी न्याय संगत क्यो ना हो किंतु हमारी लोक ग्रम सभा के वर्ग समन्वय में वह घातक होने से वर्तमान में हमारे लिये जहर के समान ही हैं। हमारे कुछ साथियो को यह बात बुरी भी लगी और कई साथियो ने तो साथ छोडने तक की धमकी भी दी तो हमने उनकी नाराजगी को मान लिया और कह दिया कि हमारा लोक ग्रम सभा का गठन वर्ग समन्वय को ही आधार रखकर होगा आप साथ रहे या न रहे यह आप पर निर्भर हैं ।
मेरा आप से निवेदन है कि हम जिस राह पर चल रहे है उसके प्रति आपने समर्थन व्यक्त किया इससे हमें सम्बल मिलां। प्रकाशवीर जी शास्त्री पूर्व में ही हमारे मार्ग दर्शक रहे हैं और अब उनके विचार हमारा सम्बल बने रहेगें।

(ग) प्रश्न – छतीसगढ के मुख्य मंत्री डा.रमण सिंह के आप प्रशंसक है उन्होने रायपुर की पत्रकार वार्ता में बताया है कि गॉधी जी स्वावलम्बी गॉव बनाकर तब ग्राम स्वराज लाना चाहते थे उनके अनुसार गॉधी जी सुशासन पहले चाहते थे जिससे सुशासन को स्वशासन की दिशा में बढाया जा सके । रमण सिंह जी ने कहा है कि गॉधी जी आजादी को पहले सुराज में और बाद में स्वराज्य में बदलना चाहते थे । इस संबंध में आपके विचार क्या है?

उत्तर.. मुझे तो आज तक पता नहीं कि गॉधी जी ने कभी सुराज के बाद स्वराज्य की बात कही ही । यह बात तो गॉधी जी के जाने के बाद नेहरु जी सर्वोदय नेतृत्व या अन्य जीवित गॉधी ही कहते रहे। महात्मा गॉधी ने ऐसा कभी नहीं कहा । रमण सिंह जी ने जो कहा है वह पूरी तरह असत्य भी है और गलत भी । असत्य तो इसलिए कि गॉधी जी ने ऐसा नहीं कहा था और गलत इसलिए कि सुराज्य स्वराज्य का परिणाम होता है आधार नही। इसका अर्थ हुआ कि पहले स्वराज्य आयेगा और तब उसके परिणाम स्वरुप सुराज आयेगा ।

पिछले साठ वर्षो से स्वराज्य के बिना सुराज की बात करने वाले देख रहे हैं कि सुराज नहीं आया क्योंकि स्वराज्य के बिना सुराज का प्रयत्न हुआ । यह असंभव तथा प्रकृति विरुध्द प्रयत्न होने से असफल हुआ । रमणसिंह जी ने एक बात अवश्य कही है कि सुराज तो आ ही रहा है किन्तु अब स्वराज्य आना चाहिये । वे मुख्य मंत्री है। उनकी नजर में सुराज आ गया चाहे आया या नही ,यह हमारे लिये बहस का विषय नहीं । हम तो सिर्फ यही चाहते है कि रमण जी स्वराज्य की दिशा में एक कदम उठायें । वे चाहें तो स्वराज्य की दिशा में एक कदम उठाते हुए निम्न घोषणाऍ कर सकते हैं ।

1.छत्तीसगढ का किसान अपना उत्पादन देश के किसी भी भाग में किसी भी ब्यक्ति को किसी भी भाव पर बेचने के लिये स्वतंत्र है। मैं आप को बता दूँ कि छत्तीसगढ का किसान अपना गन्ना सरकारी मूल्य पर सरकार को ही देने हेतु वाध्य है यदि वह सरकारी चीनी मिल के पच्चीस किलोमीटर के अन्दर गन्ना उत्पादन करता है। किसान गुड नहीं बना सकता ।

2.छत्तीसगढ का कोई भी निवासी अपनी जमीन देशइ के किसी भी व्यक्ति को किसी भी कीमत पर बेचने के लिये स्वतंत्र है। विदित हो कि छत्तीसगढ में आदिवासियों को अपनी जमीन गैर आदिवासीयों को बेचने पर प्रतिबंध है। पैसा है छत्तीसगढ के बाहर के गैर आदिवासियों के पास और जमीन है आदिवासियों के पास । गैर आदिवासी की जमीन की कीमत यदि एक करोड है तो आदिवासी की एक लाख भी नहीं है क्योंकि आदिवासी पीढी दर पीढी जमीन तो रख सकता है किन्तु पैसा नहीं। पैसा रखने का अधिकार सिर्फ सवर्णों के पास सुरक्षित है ।

3.छत्तीसगढ में कृषियोग्य भूमि में खरीदने के दस वर्ष तक कोई उद्योग नही लगाया जा सकता क्योंकि छत्तीसगढ में कृषि भूमि घट जाने का खतरा हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि दिल्ली हरियाणा पंजाब के लोग कृषि भूमि में उद्योग लगा सकते हैं किंतु छत्तीसगढ के लोग कृषि भूमि में उद्योग नही लगा सकते । गैर आदिवासी भी अपनी जमीन ऐसे गैर आदिवासी को नही बेच सकता जो कोई मकान बनाना चाहे या छोटा मोटा भी उद्योग लगाना चाहे।

4. छत्तीसगढ का किसान अपने निज भूमि पर लगे पेड नही काट सकता क्योंकि छत्तीसगढ का पेड कटने से हरियाणा पंजाब दिल्ली के पर्यावरण को नुकसान होगा।

ऐसे अनेक कानून हैं जो शहरी सवर्णो को सशक्त करने के लिये छत्तीसगढ की रमण सिंह सरकार में आज तक इस तरह चल रहे हैं जैसे छत्तीसगढ दिल्ली हरियाणा की सम्पन्न भैसो का चरागाह हैं। इसे एक पिछडे क्षेत्र के रूप में ही रहना चाहिये क्योंकि यही इनकी संस्कृति हैं और यही सम्पन्नों शहरो की आवश्यकता छत्तीसगढ के लोग जमीनें मनमाने बेचकर बराबरी में ना आ जावें, गन्ने का मनमाना गुड ना बना लें, पेड न काट दें या कोई उद्योग ना खोल लें इसके लिये उनकी संस्कृति को बचाने के नाम पर उनके पुराने स्वाभिमान की याद दिलाते रहना आवश्यक मानकर योजनाएँ बन रही हैं।

मेरा रमण सिंह जी से निवेदन है कि वे छत्तीसगढ की आदिवासी संस्कृति सुरक्षा के नाम पर पिछडे नमूने के रूप में अविकसित बनाये रखने के षडयंत्र से सावधान रहें तभी स्वराज आ सकेगा और इसकी पहली किश्त के रूप में वर्ग सघंर्ष को वर्ग समन्वय में बदलने की पहल छत्तीसगढ से हो तो अच्छा होगा ।

प्रश्न उठता है कि ऐसी छूठ होते ही आदिवासियो की जमीन गैर आदिवासी खरीदकर उन्हे भूमिहीन बना देगें। यह बात सच भी हैं किंतु आदिवासी जमीन रखे और बाकी लोग महल बनावें यह कितना उचित है? ग्राम सभा को पावर दीजिये कि वह निर्णय करें।सरकार अपने कानून हटा लें। यदि ग्राम सभा को पूँजीपति ढग लेगें तब क्या होगा? मेरा प्रश्न हैं कि आदिवासी या ग्राम सभा ना समझ है और राज्य से जुडे लोग धुर्त है या उनकी नीयत खराब हैं तो हम खराब नीयत वाले के साथ रहे या ना समझो के साथ। ग्राम सभा धेखा खा सकती है किंतु दे नही सकती। राज्य से जुडे लोग धेखा दे सकते हे किंतु धोखा खा नही सकते।

स्वतंत्रता के बाद गॉव गरीब श्रमजीवी ने धोखा खाया हैं और राजनीति से सम्बन्धितो ने दिया हैं। हर नेता कहता हैं कि आदिवासी ग्रामीण ठगा जायेगा । उसे बचाने के लिये सरकार हैं। यह गन्ने की सरकारी खरीद बाध्यता उसे बचाने के लिये किस तरह हैं यह आज तक समझ में नही आया। इसलिये मेरा सुझाव है कि नीयत खराब वालो की अपेक्षा ना समझी अधिक विश्वसनीय होगी । यह गंभीर विषय हैं । इस पर और चर्चा चलेगी । किंतु कृषि उपज विकय तो साफ विषय हैं। रमण सिंह वहीं से शुरूआत करें। खेती की जमीन में उद्योग लगाने पर रोक षडयंत्र हैं। इसमें तो पहल कर सकते हैं। अपनें पेड काटने की छूट में तो विवाद नही है। कम से कम यहीं से शुरू हो।

(घ) स्पष्टीकरण

मुझे पता चला है कि श्री राजीव भगवान जी ने अपने आंदोलन के नेतृत्व की सूची प्रकाशित की है। उस सूची में प्रवीणा देसाई , विजय कौशल जी महाराज ,मधुकान्ता बेन, शरद साधक जी ,राजेन्द्र जी जोशी ,सीता रमैया जी ,देवेन्द्र स्वरूप जी अग्रवाल तथा सुनीता जैन के साथ साथ मेरा भी नाम प्रकाशित किया है। मैनें पच्चीस दिसम्बर दो हजार आठ को ही स्वंय को ट्रस्ट को समर्पित कर दिया हैं। इसलिये मेरे लिये ऐसे किसी कार्यक्रम के नेतृत्व की टीम में शामिल होना संभव नही हैं। यह बात राजीव जी को मैने बता भी दी थी। मै पुनः स्पष्ट कर दूॅ कि ऐसे किसी भी आयोजन के आयोजक या नेतृत्व में मेरी किसी भी प्रकार की कोई भूमिका नही है। आवश्यकता नुसार आमंन्त्रित के रूप तक ही मेरी भूमिका समझी जानी चाहिये।

(च) अपनो से अपनी बात

पच्चीस दिसम्बर के बाद उन्तीस तीस अगस्त को दिल्ली में मैने अपनी पहल पर बैठक की थी। दिसम्बर के बाद आठ माह मे मैनें अनुभव किया कि आर्थिक असमानता को प्राथमिकता देने का भूत लोक स्वराज की अवधारणा को स्पष्ट करने में बाधक हो रहा हैं। मुझे दिल्ली रहते हुए भी आचार्य पंकज जी द्वारा बार बार ऐसी दिशा दी जाती रही और मेरे अस्वीकार के बाद उन्होने वात्सल्य जी के नेतृत्व मे व्यवस्था परिवर्तन मंच नाम से एक नया संगठन जून दो हजार आठ में बना लिया था तथा हरिद्वार रहने लगे थे। इस दिल्ली बैठक में भी यह मुद्दा कहीं न कही उठने के बाद मैने दो टूक स्पष्ट किया है कि हमारा संघर्ष का एक ही मुद्दा है लोक स्वराज जिसका अर्थ है शासन मुक्ति की दिशा । इस संघर्ष में कोई आर्थिक मुद्दा शामिल नही है अन्य आर्थिक या समाजिक मुद्दो को हम सहायक के रू‍ में जोड सकते हैं किन्तु संघर्ष का मुद्दा एक ही रहेगा। मेरे इस कठोर स्पष्टी करण के बाद बात बिल्कुल साफ हो चुकी थी कि जो साथी आर्थिक असमानता कोपहला मुद्दा मानते है या लोक स्वराज के साथ जोडना चाहते है वे अलग से काम करने के लिए स्वतंत्र है। बात यहॉ तक आई कि अपने निकटस्थ साथी आचार्य पंकज जी शुब्ध होकर बीच मे ही बहिष्कार करके हरि़द्वार चले गये और मेरे साथ पूर्ण संबंध विच्छेद का पत्र लिख दिये।

सेवाग्राम आश्रम में बंग जी ने जो बैठक बुलाई थी उसमें भी आर्थिक और लोक स्वराज के बीच प्राथमिक्ता के लिए रस्सा कसी चलती रही। रोशन लाल जी ने बहुत जोरदार ढंग से अपना पक्ष रखा। अन्त मे वहॉ भी मैने दो टूक स्पष्ट किया कि हमारे आंदोलन का एक सुत्री लक्ष्य है लोक स्वराज । इसमें कोई आर्थिक समाजिक मुद्दे शामिल नही है। परिवार गॉव जिले को निर्णय की अधिकतम स्वतंत्रता हो इसकी सीमाऍ तय करके वे सीमाऍ संविधान में सूचीबध्द की जानी चाहिये। जो लोग इस संघर्ष से हटकर आर्थिक समाजिक मुद्दो को जोडना चाहते है वे भिन्न बैनर तले स्वतंत्रता पूर्वक वह कार्य कर सकते है। लोक स्वराज अभियान की मांग सिर्फ एक ही है हमनें सांसदो से चार प्रश्नो पर वार्तालाप तय किया उसका अर्थ यह नही कि ये चार हमारी मांगे हैं इन चार या ऐसी अन्य मांगो को जोडकर हम अपने संघर्ष को तेज कर रहे है जैसे गॉधी जी ने भी स्वतंत्रता के साथ नमक आंदोलन को जोडा था किंतु मांग हमारी एक सुत्रीय ही है। हमनें वेतन भत्तो की मांग उठाई । राष्ट्रपति से मिले। जन्तर मन्तर पर प्रदर्शन किया। देश भर में जनप्रतिनिधियो तक विभिन्न माध्यमो से अपनी बात पहुॅचाई। सरकार ने पहल करके वेतन भत्ते रोकने की शुरूआत की हैं यह हमारी मात्र इतनी ही सफलता है कि हमारे तर्को में दम हैं किंतु हमारी यह सफलता दूर दूर तक लोक स्वराज में सहायक नही हैं क्योकि सत्ता अपने अधिकार कम करने की दिशा में जरा भी नही सोच रही। इसलिये मैं सतर्क करना चाहता हूॅ कि लोक स्वराज्य के साथ गॉधी के जाते ही छल शुरू हो गया था जो साठ वर्षो से जारी है। वैसा अब भी हो सकता है जब आकर्षक नारे लोक स्वराज्य की

अवधारणा को ही दूर बिठाकर आर्थिक सामाजिक संघर्ष को आगे ले आवें और हम फिर ठगे जावें । चिंता साथियों की नहीं है । चिंता सिर्फ यही है कि हम ठगे न जावें।

हमारे दिल्ली कार्यालय ने ज्ञान तत्व में उन स्थितियों का उल्लेख किया है कि विनोबा जी ने सन बयालीस में स्वराज्य शास्त्र लिखा जय प्रकाश जी ने लोक स्वराज्य लिखा लोहिया जी ने सप्त क्रान्ति की आवाज उठाई गॉधी जी तो मरते तक ग्रम स्वराज्य की ही बात करते रहें। किन्तु गॉधी के जाते ही सत्ता और सर्वोदय नेतृत्व ने मिलकर स्वराज्य की अवधारणा को न केवल छोड दिया बल्कि ग्राम स्वराज्य शब्द का अर्थ ही बदल दिया क्योकि साम्यवादी संस्कार मजबूती से हावी हो चुके थे। सुराज्य का आकर्षक नारा और चेहरा हमारे अच्छे अच्छे चरित्रवानो को भ्रमित कर गया।अब सुशासन और स्वशासन की स्पष्ट अवधरणा के बीच हम भ्रमित बिल्कुल न हो हम स्वशासन के लिय संघर्ष करेगें उसके साथ साथ विभिन्न मंचो के माध्यम से हम सुशासन की आवाज भी उठाते रहेगें किंतु यह सुशासन की आवाज स्वशासन की आवाज को मजबूत करने के लिए ही होगी ,धोखा देकर किनारे करने के लिए नही यह ध्यान रखना हैं

सेवाग्राम मे तथा दिल्ली में बैठकर कुछ योजनाएँ बनी है उनमें आप अधिक से अधिक लगें। कुछ साथी अलग हुए यह कोई निराशा की बात नही । लक्ष्य स्पष्ट होना ही चाहिये दिल्ली उन्तीस तीस की बैठक ने लक्ष्य साफ किया और सेवाग्राम बैठक ने उसकी पुष्टि की यह हमारी ठीक दिशा को रेखांकित करती है आप भविष्य में भी सावधन रहे यही आपसे अपेक्षा है।